• बाणभट्ट द्वारा किये गये प्रमुख कार्य :

बाणभट्ट ने सबसे लोकप्रिय और सबसे शुरुआती उपन्यासों में से एक लिखा, जिसे कादम्बरी के नाम से जाना जाता है। कादम्बरी आमतौर पर हर्षवर्धन और कादम्बरी की जीवन शैली पर आधारीत है।

बाणभट्ट ने हर्षचरित, कादम्बरी, चंडिकासक्त और पार्वतीपरिनया जैसे उपन्यास लिखें है। ऐसा माना जाता है की हर्षचरित को समाप्त करने से बाणभट्ट कि मृत्यु हो गई जिसे बाद में उनके पुत्र भूषणभट्ट ने उनकी शेष बचे कार्यों को पुरा किया।

3. हर्षकाल में बाणभट्ट द्वारा रचित कृतियां :

1. हर्षचरितम : राजा हर्षवर्धन के चरित का वर्णन
2. चण्डिकासतकम :
3. पार्वतीपरिणय :
4. कादम्बरि : मूल नाटक, कथा व बाणभट्ट के जीवन परिचय पर आधारित

नोट : बाणभट्ट की उपयोगीता चाहें जितनी भी हों या मिली हो लेकिन ख्याती प्राप्त उसे मूलत: दो कारणों से ही मिली जिसमें की

पहला कारण : उसके गुरू भत्सु / भर्वु जों की उनकी समय समय पर खास दशा एवं दिशाएं निर्दिष्ट करवातें थें।

दूसरा कारण : राजा हर्षवर्धन का सम्पर्क सूत्र और उसके बाद दरबारी कवि या अस्थाना कवि की उपाधी।

• निष्कर्ष :

अध्ययन उन प्रमुख कारकों पर चर्चा करता है जो एक कवि के रूप में बाणभट्ट से जुड़े हुए हैं। तीन अवधि में उनके द्वारा किए गए कार्यों की एक बडी प्रदर्शनी / प्रदर्शनी है। लेखक ने एक कवि के रूप में अपनी अधिकांश ख्याती अथवा सफलता वर्धन वंश के अन्तिम सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान रचि थी। सबसे प्रमुख बाणभट्ट की पुस्तक हर्षचरित का इतिहास था, जिसमें महान शासक हर्ष के उधम जीवन को शामिल किया था। अन्तिम वर्धन